अध्याय-10

आपदा प्रबंधन : एक परिचय

(DISASTER MANAGEMENT : AN INTRODUCTION)

आपदा मानवजनित अथवा प्राकृतिक घटना है जिसका प्रभाव मानव जीवन के लिए त्रासदी लाता है। इससे मानव के लिए मृत्यु, अपंगता और घायल होने की स्थिति उत्पन्न होती है। इसी के साथ निर्मित क्षेत्रों का क्षतिग्रस्त होना, फसल एवं पशु संसाधन का विनाश भी देखने को मिलता है।

प्रारंभ में प्राकृतिक संकट ही मुख्य रूप से आपदा का रूप लेता था लेकिन वर्त्तमान समय में मानवजनित संकट भी न सिर्फ आपदा का रूप लेता है वरन् यह कहीं अधिक विनाशकारी होता है। मानवजनित आपदा के सर्वाधिक विनाशकारी संघटकों में रासायनिक, जैविक और नाभिकीय कारकों से उत्पन्न आपदा होशो-हवाश उड़ा सकता है। मानव जनित सामान्य आपदायें कल-कारखानों में दुर्घटना, जहरीले उत्पाद का रिसाव, प्रदूषण, बाँध के टूटने से, मानवीय भूल के कारण आग लगने से तथा धार्मिक और जातीय दंगों से उत्पन्न होते हैं।

© BSTBPC

आपदा मानवजनित हो अथवा प्राकृतिक, उनका प्रबंधन आवश्यक है। आपदा को पूर्णतः समाप्त कर देना लगभग असंभव है, लेकिन इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसके प्रभाव को कम करने से त्रासदी का प्रभाव कम होता है और मरनेवालों की संख्या कम होती है। आपदा प्रबंधन के चार प्रमुख घटक होते हैं। ये निम्नलिखित हैं :-

(1) आपदा के पूर्व की तैयारी।

(2) जबावी कार्रवाई तथा राहत कार्य।

(3) सामान्य जीवन स्तर पर पुनः स्थापित होना और पुनर्वास।

(4) रोकथाम और दुष्प्रभाव को कम करने की योजना।

किसी क्षेत्र में आपदा आने के पूर्व याद रखी जानेवाली महत्वपूर्ण बातें नीचे दी गई हैं :-

(i) विद्यालय/समुदाय/व्यक्ति के द्वारा आपदा प्रबंधन योजनाएँ तैयार करना।

(ii) सामुदायिक जागरूकता और शिक्षा।

(iii) मॉक ड्रिल चेतावनी प्रणाली का प्रशिक्षण।

(iv) समुचित चेतावनी प्रणाली की पूर्ण जानकारी।

(v) सामग्री और मानवीय कौशल संसाधन - दोनों प्रकार के संसाधनों की सूची।

(vi) असुरक्षित समूहों और भवनों की पहचान करना।

(vii) पारस्परिक सहायता व्यवस्था को विकसित करना।

(viii) सार्वजनिक जगहों से पूर्वानुमान की घोषणा, जैसे - धार्मिक स्थलों से मुख्य पूजा एवं प्रार्थना के बाद ।

(ix) राहत कार्य चलाने हेतु विद्यालय, धर्मशाला, पंचायत भवन एवं धार्मिक स्थलों की पहचान।

आपदा आते ही जबावी कार्यवाही तथा राहत कार्यों की सामुदायिक व्यवस्था जरूरी है। कुछ आवश्यक कार्य निम्नांकित हैं :-

(i) स्थानीय समूहों की सहायता से सामुदायिक रसोई स्थापित करना।

(ii) आपातकालीन क्रिया-केन्द्र (नियंत्रण कक्ष) को चालू करना।

(iii) आपदा प्रबंधन योजनाओं को कार्यरूप देना।

(iv) चिकित्सा शिविर की स्थापना तथा दवाई और डाक्टर की पर्याप्त व्यवस्था करना।

(v) संसाधन जुटाना।

(vi) ताजा स्थिति के अनुसार आपदा की चेतावनी देते रहना।

(vii) आवास के लिए अस्थायी व्यवस्था करना।

(viii) समुचित आश्रय और शौचालय की व्यवस्था करना।

(ix) प्रभावित लोगों को ढूंढ़ने और उनका बचाव करने के लिए दल भेजना।

(x) खोज एवं बचाव दल की तैनाती करना।

इस स्तर पर निम्नांकित कार्य आवश्यक हैं :-

(i) जिनके परिजन बिछड़ गए हैं उन्हें दिलासा देने के कार्यक्रम एवं परिजन से मिलाने का प्रयास।

(ii) अनिवार्य सेवाओं- सड़क तथा संचार सुविधाओं का पुनः शुरूआत करना।

(iii) आश्रय/अस्थायी आवास सुलभ कराना।

(iv) निर्माण के लिए मलबे में से प्रयोग के लायक सामग्री इकट्ठा करना।

(v) सामान्य जीवन स्तर तथा पुनर्वास पुनः स्थापित करवाना।

(vi) रोजगार के अवसर ढूंढ़ना।

(vii) नए भवनों का पुनः निर्माण करना।

(viii) समुदाय को स्वस्थ रहने की तथा सुरक्षा उपायों की जानकारी देना।

आपदा को पूर्णतः रोकना असंभव है। निम्न कार्यों के द्वारा इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है :

(i) जोखिम क्षेत्रों में बसाव को रोकना।

(ii) भूमि उपयोग की योजना तैयार करना।

(iii) आपदा-रोधी भवन का निर्माण करना।

(iv) आपदा घटने से पहले जोखिम को कम करने के तरीके तलाशना।

(v) सामुदायिक जागरूकता और शिक्षा।

आपदा प्रबंधक के रूप में (As a disaster Manager)

बच्चों, आप स्वयं आपदा प्रबंधक बन सकते हैं। कहीं भी उद्घोषणा से जब आप यह सुनते हैं कि आपदा आनेवाला है तब घबराने या डरने के बदले आप इसकी सूचना अपने परिवार और पड़ोसियों को दे सकते हैं। इससे सभी लोग मिलकर इसके रोकथाम और बचाव में लग सकते हैं। आप अपने मित्रों और शिक्षकों के मदद से राहत कार्य चला सकते हैं अर्थात् विद्यालय में कुछ समय के लिए प्रभावित लोगों को रखना और गाँव से सहयोग

© BSTBPC

लेकर उनके भोजन और चिकित्सीय व्यवस्था करना। आपकी यह व्यवस्था आपदा प्रभावित लोगों के दुख दर्द को बाँटेगा।

> बच्चों, मैं आपको बाँका जिले के एक गाँव के एक बच्चे की इसी बहादुरी की कहानी बताता हूँ। विद्यालय के बगल में एक तालाब था। सात साल का दो लड़का एक साथ विद्यालय से लौटते समय तालाब में स्नान करने लगा। उसी समय एक लड़का डूब गया। दूसरा लड़का शोर मचाते हुए गाँव की तरफ दौड़ा। इससे बहुत सारे लोग एकत्रित होकर डूबे हुए बच्चे को निकालने में सफल हुए और प्राथमिक उपचार से उसकी जान बच गई। सात साल के गुड्डू ने पढ़े-लिखे आपदा प्रबंधकों की नाक काट ली। इसकी साहस की चर्चा बहुत दिनों तक आस-पास के गाँवों में होती रही। ऐसे बच्चे अपने कारनामों से समुदाय को जोड़ देते हैं और प्रबंधन का वह मिसाल कायम करते हैं जो इससे जुड़ी हुई बड़ी-बड़ी इकाइयाँ नहीं कर पाती हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन का कार्य

भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों में लगभग सालोभर प्राकृतिक अथवा मानवजनित आपदाओं का सैलाब देखने को मिलता है। गुजरात के भुज भूकंप 2001 और हिन्द महासागर की सुनामी (2004), जैसी प्राकृतिक आपदाओं ने आपदा प्रबंधकों को हिलाकर रख दिया। फिर हर रोज कहीं न कहीं बम ब्लास्ट और आतंकवादी घटनाएँ आपदा प्रबंधन में लगे हुए लोगों के लिए सिरदर्द बन चुका है। एक अच्छी बात यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन की कई योजनायें बनाई गई हैं। इसके दूरगामी प्रभाव निश्चित रूप से लाभदायी होंगे। जैसे –

1) आपदा प्रबंधन के लिए प्रति वर्ष बजट में आकस्मिक निधि का प्रबंधन किया गया है। इससे संकट के समय धनराशि की समस्या नहीं होती है।

2) आपदा प्रबंधन हेतु प्रधानमंत्री राहत कोष का भी गठन किया गया है।

3) आपदाओं की बारंबारता के क्षेत्र का मानचित्रीकरण किया जा रहा है। जिससे उसके क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त किया जा सके।

4) आपदा प्रबंधन में लगे हुए लोगों के लिए प्रशिक्षण का कार्य भी आवश्यक है। अतः

उसके लिए अनेक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय में आपदा प्रबन्धन की पढ़ाई भी प्रारंभ की गयी है।

5) पंचायत तथा ग्रामीण स्तर पर भी आपदा प्रबंधन के लिए न सिर्फ प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं, वरन् इससे निपटने की पूर्ण जानकारी दी जा रही है। आतंकवाद और साम्प्रदायिक दंगों को कम करने के लिए आतंकवाद विरोधी दस्ते का भी गठन किया गया है।

6) आपदा प्रबंधन में स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण है। यह परामर्शदात्री के रूप में महत्वपूर्ण कार्य करता है।

बच्चों, क्या तुम जानते हो कि वर्त्तमान समय में आपदाओं की सूचना उपग्रह के मदद से भी मिलती है। इससे अनेक प्राकृतिक और मानवजनित आपदाओं के पूर्वानुमान की संभावना बढ़ती है।

7) आपदा प्रबंधन का कार्य ग्रामसभा की साझेदारी के बिना अपूर्ण है। अतः हर आपदा प्रबंधन में ग्राम सभा की सक्रियता से आम लोगों की सक्रियता बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में लोग स्वयं कार्यों की प्राथमिकता तय करते हैं और आपदा के प्रभाव को न्यूनतम स्तर पर ले आते हैं।

आपदा प्रबंधन के लिए आवश्यक है कि प्रबंधन में समुदाय आगे आयें क्योंकि प्रबंधन का पहला लाभ व्यक्ति अनुभव करता है और दूसरा लाभ सामुदायिक संतुष्टि के रूप में होती है। अतः वर्त्तमान समय में समुदाय की भूमिका सर्वाधिक महत्व की है।

© BSTBPC

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आपदा प्रबंधन के प्रमुख घटक हैं –

(i) आपदा के पूर्व वैयक्तिक स्तर पर तैयारी करना।

(ii) आपदा के पूर्व सामुदायिक स्तर पर तैयारी करना।

(iii) रोकथाम के लिए दूसरों पर निर्भर रहना।

(iv) आपदा के संबंध में जानकारी नहीं रखना।

2. मानवजनित आपदा के प्रभाव को कम करने के कौन-से उपाय हैं ?

(i) भूमि उपयोग की जानकारी नहीं रखना।

(ii) आपदारोधी भवन का निर्माण करना।

(iii) सामुदायिक जागरूकता पर ध्यान देना।

(iv) जोखिम क्षेत्रों में बसाव को बढ़ाना।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) आपदा प्रबंधन क्या है ?

(2) आपदा को कम करने के लिए कौन-कौन से उपाय किये जाने चाहिए ?

(3) तुम आपदा प्रभावित क्षेत्र में लोगों की किस प्रकार मदद करोगे ?

(4) विद्यालय द्वारा किस प्रकार आपदा प्रभावित लोगों को मदद पहुँचाया जा सकता है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) आपदा प्रबंधन में ग्राम पंचायत की भूमिका का वर्णन करें।

(2) आपदा प्रबंधन में राष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे कार्यों की समीक्षा करें।

परियोजना कार्य

(1) बच्चों, आप अपने गाँव/मुहल्ले में एक वर्ष के अंतर्गत आग और महामारी के बारे में दादा-दादी तथा बुजुर्गों से जानकारी इकट्ठा करें।